प्रश्न – आदिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ बतायें ?

उत्तर:- शेषभाग

5. आश्रयदाताओं की प्रशंसा:-

रासो- ग्रंथों के रचयिता चारण कहे जाते थे और आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में काव्य- रचना करना अपना परम कर्तव्य मानते थे। अपने चरित- नायक की श्रेष्ठता एवं प्रतिपक्षी राजा की हीनता का वर्णन अतिशयोक्ति में करना इन चारणों की प्रमुख विशेषता कही जा सकती है। दरबारी कवि होने के कारण इन कवियों ने आश्रयदाता के शौर्य, यश, वैभव का काल्पनिक एवं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। पृथ्वीराज रासो एवं खुमान रासो इसी कोटि की प्रशंसापरक काव्य रचनाएँ हैं, जिनमें कवि ने अपने चरित नायक को राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन और हरिश्चन्द्र से भी श्रेष्ठ बताते हुए प्रत्येक दृष्टि से उनकी महत्ता प्रतिपादित की है।

6. संकुचित राष्ट्रीयता:-

इस काल में वीरता का वर्णन तो बहुत हुआ, परन्तु स्वदेशाभिमान एवं राष्ट्रीयता की भावना का अभाव है। उस समय देश खण्ड-खण्ड राज्यों में विभक्त था और इन छोटे-छोटे राज्यों के शासक परस्पर कलह और संघर्ष में रत रहते थे, वे दस- बीस गाँवों के छोटे से राज्य को ही राष्ट्र समझते थे, अतः उनमें सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की भावना का अभाव था। परिणामतः विदेशी आक्रान्ताओं के विरुद्ध संगठित होकर युद्ध करने में वे कभी सफल नहीं हुए। पड़ोसी राज्य पर विदेशी आक्रमण होने पर ये रंचमात्र भी विचलित नहीं होते थे। इसी संकुचित राष्ट्रीयता के कारण धीरे- धीरे सभी देशी साम्राज्य, विदेशी आक्रांताओं द्वारा पददलित किये जाते रहे। यदि इन शासकों ने

अपने क्षुद्र अहंभाव का परित्याग करके संगठित होकर विदेशियों का सामना किया होता तो देश को दीर्घ-अवधि तक विदेशी-शासन झेलते हुए परतंत्र न रहना पड़ता।

7. कल्पना की प्रचुरता :

चारण कवियों की रचनाएं तथ्यपरक न होकर कल्पना-प्रधान हैं। ऐतिहासिक पात्र तो इन रचनाओं में हैं, पर इतिहास नाम मात्र को ही है। कवियों ने कल्पना का सहारा लेते हुए घटनाओं, नामावलियों एवं तिथियों तक की कल्पना कर ली है। वस्तुतः इन रासो काव्यों में संभावना और कल्पना पर अधिक बल दिया गया है, तथ्यों पर कम। अपने आश्रयदाता की वीरता का काल्पनिक वर्णन करने में इन्होंने अतिशयोक्ति का सहारा लिया है और इसी क्रम में इतिहास-सत्य की अवहेलना भी कर दी है। इन वीरगाथाओं को इसी कारण से काल्पनिक कथा युक्त रचनाएं कहना अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है।

8. विविध छंदों का प्रयोग :

रासो-ग्रंथों में छंदों की विविधता परिलक्षित होती है। छंदों की यह विविधता हिन्दी के न तो परवर्ती साहित्य में मिलती है, न पूर्ववर्ती साहित्य में। पृथ्वीराज रासो में अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है, जैसे- दोहा, गाथा, पद्धति, तोमर, तोटक, रोला, सारक, कुण्डलियाँ आदि। यह छंद परिवर्तन मात्र कलात्मक या चमत्कार प्रदर्शन के लिए न होकर भाव प्रकाशन के लिए किया गया है। छंदों की विविधता के कारण ही चंदबरदाई को छंदों का सम्राट और उनकी रचना पृथ्वीराज रासो को 'छंदों का अजायबघर' कहा जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने रासो के छंदों की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है— "रासो के छंद जब बदलते हैं तो श्रोता के चित्त में प्रसंगानुकूल नवीन कम्पन उत्पन्न करते हैं।"

9. डिंगल - पिंगल भाषा का प्रयोग :-

आदिकालीन रासो साहित्य में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, वह आधुनिक हिन्दी से बहुत भिन्न है। अपभ्रंश और राजस्थानी भाषा के जिस मिले- जुले रूप का प्रयोग चारण कवियों ने रासो ग्रंथों में किया है, उसे डिंगल नाम दिया है। इसी प्रकार तत्कालीन अपभ्रंश और ब्रजभाषा के मेल से बनी भाषा को पिंगल कहा जाता है, जिसका प्रयोग भी इन ग्रंथों में किया गया है। वीर रस के भावों को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता डिंगल- पिंगल भाषा में विद्यमान है। अनुस्वारांत प्रवृत्ति एवं द्वित्व वर्णों की प्रधानता भी रासो की भाषा में उपलब्ध होती है, संस्कृत की तत्सम् शब्दावली के साथ-साथ तद्भव शब्दों का प्रयोग भी इन काव्यों- ग्रंथों में प्रचुरता से किया गया है,

10. अलंकारों का स्वाभाविक समावेश :-

रासो साहित्य में अलंकारों का स्वाभाविक समावेश हुआ है। चारण कवियों ने अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए अलंकारों का सहारा लिया है, कहीं भी चमत्कार प्रदर्शन के लिए अलंकार योजना नहीं की गई है, उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा का जैसा हृदयग्राही चित्रण इन काव्यों- ग्रंथों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है, सौन्दर्य चित्रण में उत्प्रेक्षाओं से काम लिया गया है। यद्यपि रासो के विशाल कलेवर में प्रायः सभी अलंकार खोजने से प्राप्त हो जाते हैं तथापि अनुप्रास, वक्रोक्ति, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति जैसे अलंकारों की प्रधानता रही है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आदिकालीन रासो साहित्य की प्रवृत्तियाँ तद्युगीन परिस्थितियों की देन है। जहाँ तक चारण कवियों की काव्य प्रतिभा का प्रश्न है, वह अपने में बेजोड़ है, कथा-प्रसंगों की योजना, वर्णनात्मकता, भाव-व्यंजना, रस योजना आदि दृष्टियों से रासो साहित्य अनुपम कहा जा सकता है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

प्रश्न :- आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालें ?

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० नं० - 7909046087
दिनांक - 15/02/2023